प्रातः क्लास 4/7/1968 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है ?

रूहानी बाप रूहानी बच्चों को बैठ समझाते हैं। तुम सितारे बैठे हो। बाप तो देखने में नहीं आते बाकी कौन चन्द्रमा और सितारे बच्चे। सभी हैं सजनियां। साजन तो देखने में नहीं आता। समझा जाता है। तो सभी स्टार्स ऐसे ही देखने में आते हैं जैसे ऊपर में हैं। कोई मां के सम्मुख अच्छा चमकते हैं कोई कम चमकते हैं। कोई कहां कोई कहां। तुम बैठे भी ऐसे हो। देखने में भी ऐसे ही आता है। कोई दूर–दूर होते चमकते हैं, कोई नजदीक में चमकते हैं। कोई कम चमकते हैं इसलिए तुमको कहा जाता है ज्ञान सितारे। ज्ञान और योग में कोई बहुत तीखे होते हैं, कम भी होते हैं। आत्माओं को भी देखा नहीं जाता, समझा जाता है। सभी सितारे नजदीक तो नहीं हैं। जो जास्ती चमकते हैं वह झट नजदीक में आते हैं। झट देखने में आ जाता है। बहुतों का कल्याण कल्याण करते हैं। उनपर बाप की नजर जाती है। हरेक खुद जानते हैं हम कहां तक सेवा करते हैं। यह है ईश्वरीय सेवा। ईश्वर जो बेहद का बाप है वह बैठ समझाते हैं। कैसे सेवा करनी चाहिए मनसा, वाचा, कर्मणा। मनसा सर्विस सर्विस हुई सभी को शरीर अलग कराकर बाप को याद करना। मेरा तो एक बाप दूसरा न कोई। यह बहुत ही ऊँच बात है। भारत में ही यह अक्षर हैं। शिवबाबा आते भी भारत में हैं। कहते हैं मेरा तो एक दूसरा न कोई। अर्थात सिवाय एक बाप के और किसी को याद नहीं करते हैं। बाप भी बच्चों को बार–2 समझाते हैं कि अपन को आत्मा समझो। आत्मा ही कहती है मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई। भक्ति मार्ग में तो अनेकों की याद आती है। यहां तुमको याद करना ही है एक को। दूसरा कोई याद न आये। उसका अर्थ भी अच्छी रीत समझना है। पिछाड़ी में जब शरीर छोड़े तो कोई भी याद न आये। अपने शरीर तक। शरीर भी याद न आये। फिर बाकी तो कुछ रहा ही नहीं। कहते हैं ना आप मरे तो मर गई दुनिया। शरीर छोड़ा तो खलास। तो ऐसे तुम बच्चों को बाप को याद करना है। जो शरीर भी भासे नहीं। आत्मा तो अविनाशी है। अविनाशी बाप को याद करती है। एक बाप ही मित्र है बाकी सभी हैं दुश्मन। जैसे रावण दुश्मन है वैसे सभी दुश्मन हैं। शरीर भी दुश्मन है। दुश्मनों को(शरीर को) देखना नहीं है। सभी से मित्र एक बाप ही है। बाप को ही याद करना है। याद से ही आत्मा बिल्कुल पवित्र बन जाती है। जैसे सतोप्रधान होकर आये थे वैसे ही सतोप्रधान हो लौटना भी है। कहां भटकना न है। आत्मा को मंत्र लेकर जाना है। इसको कहा जाता है माया पर जीत पाने का मंत्र। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ पवित्र होकर भागना है। देह सहित देह के जो भी सम्बन्ध हैं इन सभी को भूलने का प्रयास करना चाहिए जरूर। अन्त तक कोई भी याद न आये। यही मेहनत है। भल कोई भी प्यारा ते प्यारा हो; परन्तु कोई भी याद न आये। सबसे पहले प्यारा है अपना शरीर। फिर प्यारा होता है बाप या पति। यह दो सबसे प्रिय होते हैं। बाप जिससे जन्म मिलता है और पति जिससे सारी जीवन पास होते हैं। यह बहुत ही लवली होते हैं। परन्तु उनको होते भी फिर भी परमात्मा को जरूर याद करना है। भक्ति–मार्ग में भी याद करते हैं परन्तु अधुरा। क्योंकि समझ से याद नहीं करते। क्यों याद करते हैं वह जानते ही नहीं। हे भगवान हे राम क्यों कहते, किसको कहते कुछ भी पता नहीं और यह भी अच्छी रीत कहते हैं बाबा आप जब आवेंगे, आवेंगे तो जरूर एक्सपीट करते हैं। बाबा आप आवेंगे तो हम आपके ही बनेंगे और कोई का नहीं। यह मालूम नहीं है कि बाप की याद से ही पाप भस्म होंगे। यह और कोई समझा न सके। बाप ही अभी समझाते हैं। वह है पुण्यात्माओं की दुनिया। वहां पाप होता नहीं। यह है पापात्माओं की दुनिया। यहां पुण्यात्मा एक भी नहीं होता। पुण्यात्मा, पापात्मा कहा जाता है। पुण्य परमात्मा नहीं कहा जाता। तुम बच्चे जानते हो सतयुग अथवा स्वर्ग है पुण्यात्माओं की दुनिया। नर्क है पापात्माओं की दुनिया। रावण राज्य में एक भी मनुष्य पुण्यात्मा हो न सके। पुण्यात्माओं की दुनिया है ही स्वर्ग। पापात्मा से पुण्यात्मा कब बनते हैं कलियुग में तो हैं पापात्माएं। सतयुग में होते हैं पुण्यात्माएं। तो जब पुरुषार्थ कराने वाला आवे तब ही हम पुण्य आत्मा बने। बाप न पुण्यात्माओं की दुनिया में, न पापात्माओं की दुनिया में आते हैं। वह आते ही हैं (पुरुषोत्तम)

संगमयुगे। बाप आकर पुण्यात्मा बनाते हैं। जब नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार पुण्यात्मा बन जाते हैं तब बाप पापात्माओं की दुनिया खत्म करते हैं। पुण्यात्माओं की दुनिया की स्थापना होती है। इसको कहा जाता है नई दुनिया। अभी तुम पुरुषार्थी हो। इस समय ही तुम बाप को याद करते हो। तुम जानते हो बाप आते ही हैं पुरुषोत्तम संगम युग पर। सभी उनको याद करते हैं क्योंकि दुःखी हैं। आपदाएं खड़ी हैं। याद भी पापात्माएं ही करती हैं। पुण्यात्माओं को तो बाप को याद करने की दरकार ही नहीं। यह है पापात्माओं की दुनिया। तुम पुरुषार्थ कर रहे हो पुण्यात्माओं की दुनिया में जाने का। बाप कहते हैं तुमने जो इन्जाम किया है वह तो पूरा रखना चाहिए ना। तुम ने क्या कहा है बाबा आप आवेंगे तो हम आप पर ही वारी जाऊंगी। मेरा तो एक आप। दूसरा न कोई। यह किसने कहा ? आत्मा ने। अभी यह वचन जो बाप को दिया है उनको निभाना है। एक बाप को ही याद करो। हां उसमें टाइम तो लगेगा। एकदम पुण्यात्मा कोई बन जावे यह तो हो नहीं सकता। नम्बर वन से लेकर 84 जन्म लिये हैं। तो पूरी कला कम होती जाती है। 84 जन्मों का ही यह चक्र है। हरेक जन्म में थोड़ा कम होता जाता है। 84 जन्मों का ही चक्र है। हरेक जन्म में थोड़ा–2 कम होता जाता है। 84 जन्मों में बाप को जानते ही नहीं हैं। सुख मिला और बाप को भूले। फिर हरेक जन्म में कुछ न कुछ डिग्री कम होती जाती है। वहां एकदम पवित्र रहते हैं। फिर प्युरिटी, पीस–प्रास्पर्टी में कुछ न कुछ कम होती जाती है। फिर जब रावण राज्य होता है तो जल्दी–2 उतरते हैं। पापात्माएं बहुत हो जाते हैं। सबसे कड़ा पाप है बाप को सर्वव्यापी कहना। देह–अभिमानी बन जाते हैं। गिरते–2 अभी आकर 84 जन्म पूरे हुये हैं। अभी (तुम) बच्चों का बुद्धि में बैठा है हम 84 का चक्र कैसे खाते हैं। 84 के बाद में फिर पहला नम्बर शुरू होता है। वहां हम पवित्र रहते हैं। अभी यह सारा ज्ञान हरेक बच्चे की बुद्धि में रहता है। कितना सहज है। हम 84 का चक्र कैसे लगाते हैं बुद्धि में बैठ गया है। स्टुडन्ट की बुद्धि में है तब तो सुमिरण करते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सम्पूर्ण बनने में तो देरी है; इसलिए जो कमजोर हैं उनका काम है दौड़ी पहनना। रेस करो। बाप को याद करते रहना है। तुम्हारा यह है प्रवृत्ति मार्ग। सन्यासियों का निवृत्ति मार्ग अलग है। वह अकेले ब्रह्म तत्व तरफ़ दौड़ते है। बाप को तो जानते ही नहीं। वह अपने घर जा नहीं सकते हैं। घर में तो रहना होता है। वह समझते हैं हम ब्रह्म में लीन हो जाते हैं। यह है अनराइटियस ख्यालात। आत्मा को अनराईटियस झूठा ज्ञान मिलता है। वापस तो कोई जा नहीं सकते। घर जाने का रास्ता बाप ही बताते हैं। जब घर जाये तब फिर आये नई दु० में। बच्चों को समझाया सभी को ऊपर से नीचे आना है पार्ट बजाने। घर को खाली होना है। लास्ट में आते हैं बाप। भल मनुष्यों की वृद्धि होती जाती है। बाप कहते हैं वह क्या है, बाकी बचे–खुचे छोटे–2 टार–टारियां आद होंगे उनके भी पहले शोभा तो है ना। नये–2 मठ–पंथ निकलते हैं जिनका मान बहुत है। पुराने पत्ते तो जैसे की सड़े हुये हैं। तुम्हारा तो कुछ भी मान नहीं है; क्योंकि सूखे पड़े हो। नये2 डारियां–टारियां आद जो स्थापन होते हैं वह शोभते हैं। तुम अभी पुराने हो गये हो। तुम्हारा जरा भी मान नहीं। नये–2 का मान होता है इसलिए उन्हों के पास ही सभी जाते हैं। अभी तुम समझते हो सब से पुराने हैं देवताएं। नये–2 जो आते हैं वह बहुत चमकते हैं। उनकी लाइफ ही थोड़ी है। वह आयु पास करके आये हैं। जो पीछे आने वाले हैं उनका भी पार्ट पूरा हुआ फिर घर चले जावेंगे। बाप सभी को घर ले जावेंगे। वह है घर। जहां हम आत्माएं बिगड(र) शरीर रहती हैं। वहां नंगे ही रहते हैं। नंगा अक्षर से वह फिर नागे बन गये हैं। कहेंगे नंगे आये थे फिर नंगे ही जाना है। उनको यह ज्ञान नहीं है कि पुनर्जन्म तो जरूर लेना ही है। नंगा बनना इसको नहीं कहा जाता। अभी तुम बच्चे समझते हो वहां शरीर रूपी कपड़े नहीं होते हैं। फिर यहां शरीर में आते हैं पार्ट बजाने। बाकी शरीर को ढकने के लिए कपड़ा तो जरूर चाहिए। मनुष्य समझते नही हैं। नागों को बहुत मान देते हैं। मनुष्य समझते हैं यह बहुत ऊँच हैं। शरीर की भी प्रवाह(परवाह) नहीं रखते। सतयुग में तो ऐसे कोई नंगे होते ही नहीं। तो यह सभी बातें बाप ही आकर समझाते हैं तुम बच्चों को। जो अच्छी रीत समझ जाते हैं उनको ही कहेंगे ज्ञानी

तू आत्मा। वह है भक्ति तू आत्मा। भक्ति करते रहते। बाप को ज्ञानी आत्मा ही प्रिय लगते हैं। वह एक बाप को ही याद करते हैं। ज्ञान बिगड़(र) तो कोई यहां आ न सके। बाप का भी ज्ञान मिलता है। बाप को याद कर वरसा लेते हैं। ज्ञानी तू आत्मा भी सभी एक जैसे नहीं होते। कोई ज्ञान में अच्छे होते हैं, योग में कम होते हैं। कोई योग में अच्छे होते हैं, ज्ञान में कम होते हैं। ऐसे ही देखने में आता है। विवेक भी कहते हैं ऐसे होने का है। भल पहले भी बाप समझ सकते हैं यह राजधानी स्थापन हो रही है। इसमें जरूर सभी होंगे। प्यारे तो बहुत लगते हैं जो इन बिगड़(र) दूसरा कोई को देखने दिल नहीं होती है। कोई वह ज्ञानी तू आत्मा तो नहीं है। यह कहां भी जावेंगे तो उनको बच्चे ही याद रहेंगे। बच्चों को ही देखना है। बच्चे ही वृद्धि को पाते रहते हैं। वह आत्माएं मुझे बहुत ही प्रिय लगती हैं। (फिर) हम बाहर क्यों जावें ही क्यों। दिल ही नहीं होती मुझे सिवाय अपने ज्ञानी तू आत्मा बच्चों के अच्छा नहीं लगता है। रौरव नर्क में सभी गोते खाते रहते हैं। जैसे हैं मनुष्य वैसे हैं जनावर। मनुष्य में भी दिखाते हैं जनावर बिच्छू, टिण्डन, सर्प आद दिखलाते हैं। हैं तो सभी मनुष्य; परन्तु चलन ऐसी है बात मत पूछो। एक/दो को डसते रहते हैं। आधा, पौना तो क्या बाकी जो भी टाइम है दुःख में ही रहते हैं। बाबा के पास तो बहुत ही आते हैं आकर के दुःख का वर्णन करते हैं। बहुत रोते हैं। अच्छे बड़े घर लखपतियों की स्त्रीयां भी बड़ी दुःखी होता हैं। बात मत पूछो। पिछाड़ी है ना। लखपति हो (वा) कोई भी हो दुःखी तो सभी हैं ना। अभी उन्हों को पता नहीं पड़ता है। आगे चलकर मालूम पड़ेगा। विनाश के समय क्या होगा। फिर कहेंगे इतनी मेहनत की, कारखाने लगाई यह सभी मिट्टी में मिल रहा है। आगे चल तुम देखना। तब मजा होगा बाकी थोड़ा टाइम रहेगा फिर देखना क्या करते हैं। धन–दौलत आद सब कहां छिपावेंगे। अनायास ही सब खत्म हो जावेंगे। वह भी खत्म होंगे तुम भी खत्म होंगे। जाना तो सभी को है ना। परन्तु वह गंवाकर जाते हैं, तुम साथ में ले जाते हो। वह गरीब बन जाते हैं, तुम साहुकार बन जाते हो। तुम हो ज्ञानी तू आत्मा। वह हैं भक्त। तुम बच्चे ही प्रिय लगते हो। जो प्रिय होते हैं उनको ही वरसा मिलना है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। विश्व का मालिक बनाने लिए मैं आता हूं। बच्चे भी जानते हैं। तो ऐसे बाप को इतना प्यार से याद भी करना चाहिए ना। तुम बच्चों को लिख देना चाहिए विश्व में पवित्रता–सुख–शान्ति की स्थापना हो रही है। अर्थात् नई दुनिया की स्थापना हो रही है। तुम्हारे पास आकर समझेंगे वही (जो) कल्प पहले स्वर्ग के मालिक बने थे। बाकी और तो कोई सुनेंगे भी नहीं। जो मालिक बनने वाले होंगे। उन्हों का ताला खुलेगा जास्ती सुनने के लिए। थोड़ा–2 ताला खुलता ही जाता है। कोई का ताला बिल्कुल खुलता ही नहीं कितना भी माथा मारो। जैसे कि बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि हैं। तुम्हारा कुछ न कुछ ताला खुला है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। कोई को अच्छा लग जाता है तो बस समझते हैं यह तो बहुत सहज है। बाप को याद कर विश्व का मालिक बनना है। भक्ति मार्ग में भी याद किया है ना। सभी सुनती है आत्मा। आत्मा में ही नालेज आती है जिससे दर्जा ऊँच पाते हैं। बाकी और कोई फर्क आत्मा में देखने में आता है क्या। आत्मा में जो ज्ञान है वह आत्मा ही जानती है। जैसे बाप सृष्टि के आदि, मध्य, अन्त को जानते हैं तुम बच्चे भी जानते हो। तुम अभी नालेजफुल बनते जाते हो। जैसे आर्डीनरी टीचर पढ़ाते हैं वैसे बाप भी बच्चों को पढ़ाते हैं। फर्क है ना। नालेज आत्मा में धारण होती है। वह पवित्र होती जाती है। बाकी शरीर में तो दूसरा कोई चमक नहीं आवेंगे। आत्मा में ज्ञान है तो वह हर्षितमुख खुशी में रहती है। वह भी किसका सदैव कायम नहीं रहता। बिमारियां आद बहुत होती हैं। यह है दुःख की दुनिया। तुम बच्चे जानते हो हम भविष्य 21 जन्म सदैव ही हर्षित रहेंगे। वहां दुःख की कोई बात नहीं सुनेंगे। दुःख किसको कहा जाता है वह तुम वहां जानते ही नहीं हो। यहां दुःख दोनों को जानते हो। याद भी नहीं रहेगा कि हम फिर ऐसे दुःख में जावेंगे। यह भी अभी तुम जानते हो। वह तो समझते हैं कलियुग अजुन 40000 वर्ष पड़ी है; इसलिए तुम कहते हो वह अज्ञान नींद में सोये पड़े हैं। शास्त्रों के कारण यह हालत हुई है। जिन शास्त्रों को फिर गाड़ी में बिठाये परिक्रमा दिलाते हैं।

अभी तुम समझते हो इन भक्ति मार्ग के शास्त्रों से क्या प्राप्ति हुई है। जैसे शास्त्र गिरे हुये हैं खुद भी गिरे हुये हैं। गिरे हुये गिरे हुये चीज को ही परिक्रमा दिलाते हैं। कोई जरूर निकलेगा जो इस कुल के होंगे। उनको दिल से लगेगा। यह ब्रह्माकुमारियां तो ठीक कहती हैं। वह समझते हैं शास्त्रों का ही बहुत ऊँचा ज्ञान है। वह ही सद्गति को प्राप्त कराती हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो सद्गति दाता तो एक ही बाप है। परमपिता परमात्मा ही आकर ज्ञानी तू आत्मा बनाते हैं। तुम अभी आस्तिक भी बने हो। आस्तिक कुमार। शिवबाबा के बच्चे हो ना। सभी आत्माएं शिव कुमार हैं। सभी को कहेंगे शिवकुमार। ब्रदर्स हैं ना। सभी भाईयों का बाप एक है। शिवकुमार हैं तो कुमारों को अर्थात् बच्चों को शिवबाबा से राज–भाग मिलता है स्वर्ग का। बुद्धि कहती है कि राजाई में तो प्रजा आद भी होंगे ना। यह राजाई स्थापन हो रही है। सभी श्रीमत पर पुरुषार्थ करते हैं स्वर्ग का वरसा पाने। फिर उसमें कोई जास्ती पढ़ते हैं कोई कम पढ़ते हैं। कोई अच्छी रीत याद करते हैं कोई नहीं करते हैं। मेहनत है। इन ल०ना० को देखकर सभी खुश होते हैं तुम भी खुश होते हो। समझते हो हम नर से ना० नारी से ल० बनते हैं। तो ऐसा पुरुषार्थ भी करना चाहिए ना। यह भी समझते हैं सभी तो नहीं बनेंगे। स्वर्गवासी तो जरूर बनेंगे। स्वर्गवासी बनना चाहते हैं; परन्तु स्वर्ग में भी क्या बनना चाहते हैं वह नहीं कहते। बस सिर्फ़ कहते हैं फलाना स्वर्ग पधारा। तो खुश होनी चाहिए ना। वहां तो दुःख का नाम–निशान भी नहीं रहता। तुम हर 5000 वर्ष बाद आधा कल्प सुख भोगते हो। वहां धन–पाल बहुत रहता है। विचार करो भारत में कितना अकीचार धन था। बहुत–2 धन था। भक्ति मार्ग में भी कितनी राजाई होती है। सभी राजाओं पास मंदिर हो(ते) हैं। अच्छे राजा के पास जरूर अच्छा ही मंदिर होगा। अभी तक भी ल०ना० के मंदिर बनाते रहते हैं; परन्तु उनको कुछ भी पता नहीं है। आगे चल देखेंगे अभी तो मौत सामने आ रहा है। फिर मंदिर आद बनाना छोड़ देंगे। मंदिरों में देवताओं के चित्र हैं। उनका दर्शन करने जाते हैं बन्दर। सतयुग में तो न मंदिर हैं न बन्दर हैं। यहां हिसाब पूरा है। बन्दर जाते हैं मंदिरों में। खुद देवताओं के आगे जाकर कहते हैं आप सर्वगुण सम्पन्न..... हम पापी, नीच, कामी कुत्ते हैं। तो बन्दर ठहरे ना। यह भी अभी तुम बच्चों को पता पड़ा है। मंदिरों में बन्दर ही जाते हैं। तुमने अभी मंदिरों में जाना छोड़ दिया है। तुम तो अभी यह बनने का पुरुषार्थ कर रहे हो। कहते हो बाबा आपसे स्वर्ग का वरसा लेने आये हो। क्या से क्या बनते हैं। अभी तुम जाकर सुनो क्या–2 कहते हैं बन्दर लोग। सूरत मनुष्य की है परन्तु सीरत बन्दर की है। अभी तुम्हारी सीरत दैवी बन रही है। फिर सूरत भी बदल जावेगी। देवता बन जावेंगे। तो बाप समझाते हैं दैवी गुण धारण करो। तुम कहां भी मंदिरों आद में जाओ तो तुमको वहां (बन्दर) बहुत मिलेंगे। मेरे भक्त हैं या देवताएं के भक्त हैं, वहां सर्विस करने जाओ। उनको समझाओ तुम यह पुरुषार्थ कर मंदिर लायक बन सकते हो। सिर्फ़ बाप को याद करो तो तुम मंदिर लायक बन शिवालय में चले जावेंगे। जितना बहुतों की सर्विस करेंगे उतना ही ऊँच पद पावेंगे। बच्चों को बहुत खुशी होना चाहिए ना। वह हैं भक्त तू आत्मा। तुम हो ज्ञानी तू आत्मा। बाप मिला है तो तुमने भक्ति छोड़ दी। ज्ञानी तू आत्मा बने हो। वह सभी हैं भक्त तू आत्मा। आत्मा तो सभी हैं। वह आत्माएं भक्ति करती हैं तुम आत्माएं ज्ञान सुनती हो। बाप को बच्चे ही बहुत प्रिय लगते हैं। जो ज्ञानी तू आत्मा हैं। बाकी तो बन्दर मिसल हैं। अच्छा मीठे–2 बच्चों को बाप व दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते। हलो मम् प्राणों अभी आबू की प्रदर्शनी तो पूरी हुई। तो मधुबन की रिम–झिम भी हल्की ही हो गई है। फिर भी कोई आते, कोई जाते ही रहते हैं। बापदादा की ज्ञान बरसातों से परिपूर्ण होकर अर्थात् आत्मा में वह बल भरकर, विश्व के मालिकपने का नशा लेकर जाते हैं। ज्ञान बरसात के साथ–2 स्थूल बरसात भी शुरू हो गई है। दोनों बरसातों के संगम का सुहावना समय का बहार लूट रहे हैं। यह सौभाग्य प्राप्त करने भला किसका दिल न ललचाता होगा। ऐसे बापदादा के मधुर महावाक्य जैसे कि दिल में तीर के समान चूभते हैं। दिल तो कहती है ऐसे बाप दादा का साथ तो कभी छूटे ही नहीं। इसके आगे सतयुग के सुख भी फीके पड़ जाते हैं। पर कर कुछ नहीं सकते। भावी। अच्छा अभी विदाई।